पंचम अध्याय

'मौत का नगर' के पात्रों के अन्य संघर्ष

लेखक ने 'मौत का नगर' कहानी संग्रह की कहानियों में पारिवारिक सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक संघर्षों की चर्चा की है।

5.1 राजनीतिक संघर्ष

5.1.1 व्यक्ति की स्वार्थ भावना

आज हमारे देश में ऐसे कितने लोग मिलेंगे जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकते हैं। पढ़े-लिखें होते हुए भी हमेशा दूसरों से इर्ष्या करते रहते हैं। किसी की अंतरमन की बात का पता हमें नहीं लगता। अपने को ही श्रेष्ठ समझते हैं। दूसरों के प्रति क्रोध एवं घृणा का भाव रखते हैं। यही बात 'महान चेहरा' इस कहानी में अमरकांत ने स्पष्ट की है।

'महान चेहरा' इस कहानी में अमूल्य एक पात्र है। वह विश्वविद्यालय के होस्टल में रहता है। राजनीति के प्रति वह दिलचस्प है। किसी साधारण सी बात में भी वह लंगूर की तरह कूद पड़ता और फौरन उसको युद्ध-स्तर की बहस का रूप दे देता। वह अब निश्चित रूप से अपने को प्रिंस क्रोपाटकिन या उन्हीं की तरह योग्य समझने लगा है। वह कल्पना में अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने लगा है। आत्मश्रेष्ठता के एहसास ने उसके हृदय में दूसरों के प्रति क्रोध एवं घृणा के भाव भर दियें। किसी और की अगर कोई तारीफ कर दे तो वह फौरन कह उठता, ''क्या अच्छाई है ? ये सभी लोग मूलतः बड़े नीच लोग हैं।''[1] जब उन्हीं दिनों कलकत्ते में भीषण हैजे का प्रकोप हुआ। देखते ही देखते हजारों लोग मर गयें। लेखक और मित्रोंने लोगों की सहायता के लिए कुछ चंदा इकट्ठा किया लेकिन अमूल्य ने चंदा देने से इन्कार किया अगर दुनिया के किसी भी हिस्से में कोई दुर्घटना घट जाती है तो वह बहुत ही प्रसन्न हो जाता है।

एक दिन कमरे में एक काला साँप आ जाता है। सभी होस्टल के विद्यार्थी हाथ में हॉकी स्टिक लेकर हल्ला मचाने लगते है लेकिन अमूल्य वहाँ से भाग जाता है। लेकिन एक पहाड़ी लड़का था उससे थोड़ी सी चूक हो गयी और साँपने उसके हाँथ को काटा। लेखक और उसके मित्र ने उस लड़के की मृत्यू के लिए बहुत अफसोस किया। पर अमूल्य कहता है, ''बेहुदी बात है, दिमाग से सोचो तो पता चले। तुम लोग

कुछ पढ़ते तो हो नहीं बस बहस करने चलते हो। साहस सदा साहस होता है वास्तविक साहस मृत्यु की परवाह नहीं करता।"[2] उसकी महानता चौबीस घंटे लेखक तथा उसके मित्रों को भोगनी पड़ी। वह कभी भी अपने चीजों का इस्तेमाल नहीं करता बल्कि दूसरों के ही चीजों का इस्तेमाल करता।

जनवरी के आरंभ में शहर पर एक बड़ी विपत्ति आ गयी। चेचक का भयंकर प्रकोप होने से काफी लोगों की मृत्यु हो गयी। विश्वविद्यालय के लड़कों को भी अपने प्राण गँवाने पड़े। इस बात से अमूल्य भयभीत हो गया उसको डर लगने लगा कि कहीं चेचक के कीटाणु मुँह में न जायें। इसलिए वह हमेशा नाक पर रूमाल लगाये रखता। जब चेचक का भय कम हो गया तब उसकी राजनीतिक बहस फिर आरंभ हो गयी। उसकी उग्रता और कटुता बढ़ गयी। वह सबके साथ संघर्ष जैसा व्यवहार करने लगा। किसीसे भी उसकी पटती नहीं है। उसके विचार राजनीतिक नेता की तरह है जो मुत्सेदी और व्यभिचारी होते हैं।

5.1.2 राजनीति में भ्रष्ट मानव प्रतिमा

राजनीति ने मानव प्रतिमा को किस प्रकार भ्रष्ट और खंडित किया है यह सब स्वातंत्र्योत्तर कहानी में साकार हो उठा है। राजनीतिक नेताओं की प्रतिमा का चित्रण 'हत्यारे' इस कहानी में किया है। हत्यारे में ऐसे समाज का आभास भरा है जो दिन-प्रति दिन चलता हुआ अमानवीय स्थितियों की ओर उन्मुख हो रहा है। 'हत्यारे' हमारी मौजूदा व्यवस्था के ऊपर एक बहुत तीखी टिप्पणी है ओर उस कहानी के वे हत्यारे युवक अपने में अकेले नहीं है बल्कि उनके समानधर्मीओं की बाढ़ बड़ी तेजी से हमारे देश में आयी है।

एक शाम को पान की एक दुकान पर दो युवक मिल जाते हैं। दोनों आपस में नेताओं को लेकर बातचीत करते हैं। आज देश भारी संकट से गुजर रहा है और मंत्री बेईमान और संकीर्ण विचारों के हैं। जो ईमानदार हैं उनके पास अपना दिमाग नहीं है। अब लीडरशिप भी कमजोर है। आजकल अफसर भी धोखा देते हैं। जनता की भलाई के लिए पाँचसाला की योजनाएँ शुरू की लेकिन सरकारी कर्मचारी अपने घरों में ही भरने लगे हैं। सारे देश में कुछ लोग लूट-खसोट मचाये हुये हैं, लेकिन उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करता।

वहाँ से आगे चलकर वह बाजार के दो और चक्कर लगाते है। बाद में एक रिक्शा में बैठकर एक बस्ती के पास जाते है। वे पहली ही झोपड़ी में घुस जाते है। दाहिनी तरफ एक कोने में एक औरत चूल्हे के सामने बैठी खाना बना रही थी। उसकी उम्र चौबीस-पच्चीस की होगी। वह औरत सीधी सादी और सरल स्वभाव की है। वह औरत कहती है, बहुत दिन के बाद दर्शन दियें। उस युवक में से एक युवक कहता है आज तुम्हारी सेवा में विश्व के एक महान नेता का लाया हूँ। ये आखिल विश्वलोफर संघ के अध्यक्ष हैं। इनको हर तरह से तुम्हें खुश करना है। इसके लिए वह औरत ज्यादा रुपयों की माँग करती है। लेकिन इनके पास तो कम ही रुपये है। वे रुपयों का बहाना बनाकर पान की दुकान की ओर जाते हैं और वहाँ से निकलते हैं। लेकिन वह औरत झोपड़ी के बाहर निकल आयी और छाती पीट-पीट कर विलाप करने लगी, ''अरे लूट लिया हरामी के बच्चों ने उनपर बज्जर गिरे।''[3]

झोपड़ियों से कुछ लोग निकालकर युवकों के पीछे दौड़ जाते है। उस युवक में से एक युवक के जेब में छूरा था जो उसने निकालकर पीछा करनेवाले व्यक्ति के पेट में भोंक दिया। इसके बाद पुनः तेजी से भाग निकलें। जब बिजली का खंभा आया तो रोशनी में उनके पसीने से लथपथ ताकतवर बदन बहुत संदर दिखाई देने लगें। यह रोशनी भेद खोलने वाली हैं कि इनकी सुंदरता से इनकी कुरूपता अधिक सामने आ जाती है। रोशनी से इनके ताकतवर शरीर में छुपी घृणित कायरता और खुल जाती है फिर अंधेरे में न मालूम कहाँ खो जाते हैं।

समाज की विषमता के विष ने उन्हें विषैला बना दिया है। उनके विषैलेपन पर प्रहार करने की अपेक्षा उस सामाजिक विषमता का संत्रास कहीं ज्यादा उभरता है। जिससे इन युवकों को उतना घृणित, कायर, दयनीय बना रखा है जितना कि वे सुंदर और बलिष्ठ हैं।

5.2 धार्मिक संघर्ष

5.2.1 हिंदू-मुसलमानों के आपसी संबंध

स्वाधीनता के बाद भी समय-समय पर हिंदू-मूसलमानों के सांप्रदायिक दंगे किसप्रकार आए दिन

भारत में होते रहते हैं, यही 'मौत का नगर' कहानी में दर्शाया है। इस कहानी में राम एक पात्र है। जब राम घर से बाहर निकलता है तो चारों तरफ दंगा-फसाद का भयानक वातावरण छाया है। वह चूपचाप लोगों की बातें सुनता है। "एक ने होठों में ही भुनभुना कर पूछा कोई खास बात ? स्टेशन के पास एक आदमी को छुरा लगा है।" हिंदू है, नहीं मोहमड़न है। क्या हिम्मतगंज में किसी लड़की की लाश मिली है ? हाँ, मोहमड़न है ? नहीं हिंदू है।"[4]

उसको लगा जैसे कोई उसके दिल को ऐंठ कर रक्त को निचोड़ रहा हो। पर लोगों को अलग करने की कोशिशें सदा के लिए सफल नहीं होती उधर वाला मोहला मुसलमानों का था। आजादी के बाद दोनों मोहल्लों के लोग प्रेम से रहने लगे थें। आपस में प्रेम का व्यवहार रखते थें। लेकन अचानक यह सब खत्म हो गया और अब लोग हत्या, भय और अफवाहों के अलावा और किसी बात पर विश्वास नहीं करते है।

अब लोग कहीं-कहीं मकानों या दुकानों के सामने गिरोह बनाकर खड़े रहे। कुछ अन्य लोग भी सड़क पर आ-जा रहे है। राम के शरीर में अब ताकत नहीं थी पर जान का भय उसको भगाये लिये जा रहा था। इसी समय बायीं ओर से एक नौजवान दौड़ते हुए आया, पर वह बड़ी फूर्ति से बच गया। वह अपने को मरा हुआ देख रहा था। राम को एक परिचित मुसलमान बचा लेता है और कहता है, "बाबूजी, आप सीधे चले जाइए घबड़ाइए नहीं। ये साले बाहर से आकर मोहल्ले को बदनाम करना चाहते हैं।"[5] राम एक रिक्शे में बैठ जाता है। बैठते ही सारा शरीर फिर सुन्न हो जाता है। भीतर एक दाढ़ी वाला मुसलमान बैठा था। इस तनावपूर्ण वातावरण में मुसलमान बुढ़े के साथ रिक्शे में बैठना यह सहअस्तित्व का प्रतिक है। अमरकांत ने इस कहानी के माध्यम से हिंदू-मुसलमानों के आपसी कटु-मधुर संबंधों का वर्णन किया है।

5.3 मानसिक संघर्ष

हमारे देश में ऐसा कानून है कि छोटे बच्चों को काम पर लगाया न जाए। लेकिन यह कानून सिर्फ कानून ही रह गया है। हम देखते हैं कि बच्चों को छोटी उम्र में ही काम करना पड़ता है। क्योंकि वे पीड़ित असहाय हैं। उनको सहानुभूति की आवश्यकता है। लेकिन हमारे देश के लोग अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए या

प्रतिष्ठा के लिए छोटे बच्चों से घर में काम करवा लेते हैं। इसी बात को अमरकांत ने 'बहादुर' कहानी में चित्रित किया है।

इस कहानी का मुख्य पात्र बहादुर नामक एक लड़का है। उसका गाँव नेपाल है। उसके पिता युध्द् में मारे गये हैं और माँ ही सारे परिवार का भरण-पोषण करती है। उसकी माँ बड़ी गुस्सैल है। उसने एक बार उस भैंस को मारा जिसको उसकी माँ बहुत प्यार करती है। इसी वजह से माँ उसकी बहुत पिटाई करती है। लड़के का मन माँ से उड़ जाता है और वह रातभर जंगल में छिपता है। बहादुर की उम्र कुछ बारह-तेरह वर्ष की है। लेखक के साले साहब उसे अपने घर में काम के लिए रखते है। बहादुर बहुत ही हँसमुख और मेहनती लड़का है। धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगता है। बहादुर की वजह से सबको खूब आराम मिल गया। घर खूब साफ और चिकना रहने लगा। किसी को मामूली से मामूली काम करना हो तो वह बहादुर को आवाज देते, " 'बहादुर' एक गिलास पानी। बहादुर पेन्सिल नीचे गिरी है, उठाना। इसीतरह की फरमाइशें करते। बहादुर घर में फिरकी की तरह नाचता है। इतनी सारी फरमाइशों की पूर्ति में कभी-कभी कोई गड़बड़ी भी हो जाती तो उसको खराब गालियाँ सुननी पड़ती और उस पर हाथ भी उठा देते है।"[6]

एक दिन घर में रिश्तेदार आये। घर में बड़ी चहल-पहल मच गयी। पर इसी समय एक घटना हो गयी। रिश्तेदार की पत्नी जबरदस्ती मुस्काराकर मजबूरी में सिर हिलाते हुये बोली, क्या बतायें ग्यारह रुपये साड़ी के खूँट से निकालकर यही चारपाई पर रखे थें पर वे मिल नहीं रहे हैं। उन्होने बहादुर पर चोरी का इल्जाम लगा दिया। लेकिन बहादुर चिल्लाकर कह रहा था "बाबूजी मैंने नहीं लिया।" साले साहब ने उछलकर उसके गाल पर एक तमाचा दे दिया। इस घटना के बाद बहादुर काफी डाँट-मार खाने लगा। अब सभी लोग उसको कुत्ते की तरह दुराचार करने लगें। एक दिन ऐसा आ गया कि बहादुर वहाँ से भाग गया। अपना कोई भी सामान नहीं ले गया। वह विचित्र मनोवृत्ति का शिकार हो गया। अगर वह यहाँ रहता तो उसे और भी तकलीफें उठानी पड़ती।

5.4 सामाजिक संघर्ष

5.4.1 दोस्ती में संघर्ष

हमारे समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जो अपनी जान की बाजी लगाकर अपनी दोस्ती का फर्ज अदा करते हैं। दोस्त वे होते हैं जो सुख-दुःख में साथ दें। लेकिन ऐसे दोस्त भी हैं जो अपने स्वार्थ की खातिर दोस्ती में दरार पैदा करते हैं। आपस में झगड़ते हैं और दोनों एक दूसरे से इर्ष्या करते हैं। ऐसा ही चित्रण अमरकांत ने 'म्यान की दो तलवारें' इस कहानी में किया है।

राजशेखर 'मदमस्त' और देवकी नंदन 'विकल' इन दोनों में बड़ी दोस्ती थी। यह दोस्ती तेजी से बढ़ी और चोली-दामन की तरह पक्की हो गयी। वह दोनों एक ही कार्यालय में काम करते है। एक दिन उसी कार्यालय में काम करनेवाले आनंद सिंह ने राजशेखर 'मदमस्त' से कहा - देवकी नंदन 'विकल' तेरी बड़ी आलोचना कर रहे है। सभी कविताएँ छापील हैं। 'मदमस्त' का हृदय क्रोध और अपमान से जलने लगा वह सब कुछ सह सकता था, किंतु एक सच्चे कवि की तरह अपनी कला का अपमान बरदाश्त करने को किसी भी सूरत में तैयार नहीं था। 'मदमस्त' ने अपने अपमान का बदला फौरन लिया। 'मदमस्त' ने सोच पूर्वक एक कागज के टुकड़े पर दो पंक्तियों की कविता लिख दी -

> "देर हो रही है, देर हो रही है,
> जौनपुर की लोमड़ी शेर हो रही है।"[7]

कविता पढ़कर देवकी नंदन 'विकल' बौखला गया। ऐसी सारगर्भित कविता बनाने की 'विकल' में योग्यता नहीं है। पर इसका जवाब देना बहुत जरूरी था। उसने भी काफी सोच विचार पूर्वक लिख दिया -

> "देर हो रही है, देर हो रही है
> 'मदमस्त' जैसे गीदड़ों की ढेर हो रही है।"[8]

इसकी वजह से आपस की बातचीत फौरन बंद हो गयी। दोनों की इस अर्थहीन आपसी लड़ाई ने दोनों का विवेक इस सीमा तक कुंठित कर दिया कि भले-बूरे का निर्णय किये बिना वे हमेशा एक-दूसरे के

विरोध में खडे हो जाते। 'विकल' को नीचा दिखाने के लिए ही 'मदमस्त' प्रबंधो की चापलुसी के लिए अपने को तैयार करता है। जब 'विकल' ने कविता लिखी उसे दिल्ली की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका में छप गयी। इसी को लेकर 'मदमस्त' मन-ही-मन कुढ़ता गया। उसने सबसे पहले प्रेस के साथियों और नगर के साहित्यिकों के बीच यह अफवाह उड़ा दी कि 'विकल' की नवप्रकाशित कविता निराला और महादेवी की कविताओं से प्रभावित हैं। उसी की तरह कोई कविता मासिक पत्रिका में नहीं छपती उसके मन को शांती नहीं मिलने वाली है। अंत में एक कविता लिखकर बंबई की उषा नामक पत्रिका के लिए भेज दी। अब सब कुछ बर्दाश्त के बाहर हो गया। दोनों की स्थिति ठीक छत्तीस की तरह हो गयी। आखिर तक वे एक दूसरे के प्रति इर्ष्या करते रहें और इसका फायदा दूसरों ने लिया।

5.4.2 अन्याय के विरोध में संघर्ष

जब किसी के साथ अन्याय होता है तब वह उसके विरुद्ध आवाज उठाता है। ऐसा ही 'काली छाया' कहानी में हुआ है। 'काली छाया' इस कहानी में एक युवक अन्याय के विरुद्ध झगड़ने की कोशिश करता है।

एक बस्ती में दो खाटें पड़ी थी। एक पर सोलह-सत्रह वर्ष की एक लड़की सोई है तो दूसरी खाट पर लगभग पचास वर्ष की एक अधेड़ स्त्री है। सारे मोहल्ले में उच्च तथा निम्नवर्गीय लोग इसी तरह अपने घरों के सामने चारपाइयाँ निकाल कर सोते हैं। ऐसे में एक घटना घटती है। इसी बीच एक काली छाया जवान लड़की की खाट पर पहूँचते ही लड़की चोर-चोर चिल्लाती है। सारे बस्ती में हंगामा मच जाता है। लोग अपनी चारपाइयों से उठकर दौड़ते है और उस काली छाया को पकड़ लेते है फिर उसकी जमकर पिटाई करते है। मार पड़ने से उसके बाल अस्तव्यस्त हो जाते है और होठों से खून बहता है। जब उसकी पुछताछ की जाती है तो वह बताता है कि, ''मैने चोरी वोरी नहीं की मैं घर जा रहा था, अंधेरा बहुत है तो रास्ता भटक गया और खाट से लड़ गया। लेकिन किसीने उसकी एक ना सुनी उसमें से चार-पाँच लोग निकल कर उसे बूरीतरह पीटने लगें। थोड़ी देर बाद उसे एक पेड़ से बाँध दिया जाता है। अब चारों ओर सिर्फ खाटें नजर

आ रहे है। सुबह होने पर वह अब बहुत ही दयनीय प्राणी मालुम हो रहा था। जो कल चोर कहकर मार रहे थें अब उनके दिल उदारता, करूणा और पश्चाताप से भर गये।

वह आदमी जोर-जोर से चिल्लाने लगा, जैसे किसी फिल्म का मजदूर कोई क्रांतिकारी भाषण दे रहा हो। उस पर अब तरस आने लगा और सहानुभूति से उसकी रस्सी खोल दी गयी। जब उसकी रस्सी खुलवा दी तो वह चल न सका। उसके पैरों में झिनझिनी पड़ गयी हैं। सहजा वह जोर से 'थू' की आवाज करते हुए जमीन पर थूका और भीड़ को घूरकर तेजी से चला गया।

वह युवक करता तो क्या ? इसका गुन्हा तो क्या था ? वह गलती से उस बस्ती में आ गया और बस्ती के लोग से मार खा गया। इसवजह से वह बस्तीवालों के लोगों से नफरत करता है। वह युवक अन्याय के विरुद्ध झगड़ने की कोशिश करता है। वह अन्याय के खिलाफ चलकर संघर्ष करता है।

5.4.3 स्त्री की लालची मनोवृत्ति

'फ्लाश के फूल' इस कहानी में लेखक ने एक स्त्री की लालची मनोवृत्ति की प्रतिमा को प्रस्तुत करती है। इस कहानी में वयस्कों के कृत्रिम रोमांस को दर्शाया गया है। कहानी में राम नवल किशोर अपने एक मित्र को अपनी जवानी के दिनों की कहानी सुनाते हैं कि, "जमींदारी के दिनों में कैसे तरह-तरह के मजे किये, घर-गृहस्थी छोड़कर जमींदारी में पड़े रहते है। जिसकी बहू-बेटी को चाहा उठवा लेते थें। किसकी मजाल थी जो उसके सामने आता और विरोध करता।"[9] ऐसा ही 15-16 वर्ष की अंजोरिया के साथ हुआ। अंजोरिया के पिता किसान है। एक दिन अंजोरिया से रायसाहब की मुलाकात हो जाती है। उस लड़की की सूरत ध्यान पर क्या चढ़ी की सब कुछ हराम हो गया। उस लड़की का बाप सीधा-साधा किसान है जिसे पेट भरने के लिए खेती के अलावा इधर-उधर मजदूरी भी करनी पड़ती है। रायसाहब में अब इतंजार और बरदाश्त करने की शक्ति नहीं रह गयी। हारकर एक दिन चार आदमियों को लगाकर रात के अँधेरे में लड़की के पिता भुलई को खूब अच्छी तरह पिटवा देते है। भुलई के हाथ पैर बेकाम हो गयें। बाद में रायसाहव ही उसके लिए काम आते है। उसकी दवा-दारू के लिए उधार पैसे देते है, उसके प्रति हमदर्दी के छद्म में उसके

घर तक पहूँचते है और अंजोरिया को काम के बहाने घर पर बुला लेते है। जब अंजोरिया काम पर आने लगती है तो रोज मौका देखकर रायसाहब उससे बात करतें, उसके बाप की तकलीफ के लिए सहानुभूति प्रकट करते, उसके हाथ में मजदूरी से अधिक पैसे रख देते। वह बड़ी भोली थी, कुछ न बोलती थी। धीरे-धीरे वह नखरे दिखाने लगी उसे रायसाहब जब और जहाँ बुलाते वह बिना हिचक आ जाती। बाद में वही अंजोरिया दो तीन साल तक उनकी पालतू बकरी की तरह रहने लगी। उनके प्यार के इस नाटक में इतनी बूरी तरह डूब गयी कि अपने ससूराल जाने को मना कर देती है एक दिन रायसाहब से प्रस्ताव रखती है कि वह उसे कहीं भगाकर ले चलें और शहर में मकान लेकर उसे एक रखैल की तरह रख लें क्योंकि यहाँ गाँव वाले उसे तानों से परेशान करने लगे हैं।

रायसाहब के अंदर कोई कह रहा था नवलकिशोर (रायसाहब) तुम आज तक शैतान की चक्कर में रहे हो वही शैतान तुम्हारी इज्जत जमीन, जायदाद, बालबच्चें सभी कुछ छिनकर बरबाद करना चाहता है और यह बात सच थी। एक लालची औरत में ऐसी ईमानदारी और लगाव का कारण क्या हो सकता है। उसने पहले अपने रूप के जादू से रायसाहब को वश में किया और फिर अपना प्यार जताकर उनको उल्लू बनाती रही। रायसाहब का रुपया पैसा बरबाद करती रही। माया का असली रूप आप यही देख सकते हो। रायसाहब देर तक पश्चाताप की आग में जलते रहें।

इस कहानी में लेखक ने दो परस्पर विरोधी जीवनमूल्यों के द्वंद्व को उभारा है। वह उस ढोंग और छद्‌म की और भी संकेत करना चाहता है जो रायसाहब जैसे लोगों की सबसे बड़ी पूँजी है और समाज में उनका सारा व्यापार उसीके सहारे चलता है और खूब चल सकता है।

5.4.4 **नौकरी के लिए संघर्ष**

आज हमारे देश में सुशिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ गयी है। नौकरी पाने के लिए बहुत सारे प्रमाणपत्र तथा अपने अंतर्गत गुणों की आवश्यकता होनी चाहिए तभी आपको एक अच्छी नौकरी मिल सकती है। लेकिन ऊपर से ऐसे कोई आदेश निकले जाते हैं कि आम आदमी का जीना मुश्किल हो जाता है।

ऐसा एक उदाहरण 'घुड़सवार' कहानी में दर्शाया है। इस कहानी में ऐसे आदमी का वर्णन किया जो नौकरी पर है। ब्रिटिशों के जमाने से चले आये पुराने नियम के अनुसार 'कलेक्शन नायब तहसीलदारों' को भी घुड़सवारी में निपुण होना चाहिए था। एक दिन उसे जिलाधीश का हुक्कनामा मिला। उसमें लिखा था कि दो महीने बाद घुड़सवारी की परीक्षा होगी। उसे लगा गोया ताड़ के वृक्ष पर चढ़ते-चढ़ते फिसलकर जमीन पर गिर गया है। वह बहुत डर जाता है। वह आजतक हाड-मांस के जीवित घोड़े पर कभी चढ़ा ही नहीं था।

वह सोचता है कि मौका आने पर घुड़सवारी कर लूँगा। लेकिन इतना सब सोचने पर उसका उत्साह और क्रोध पता नहीं कब खिसक गया और वह अपने को एक बीमार गीदड़ की तरह महसूस करने लगा। दूसरे दिन जब जिलाधीश से मिलने तहसीलदार गयें तो वें घबरा गयें और हाथ पाँव फूलने लगें। इसके बाद जब तीन-चार दिन घुड़सवारी की परीक्षा के लिए रह गये थें तो बनिया के एक लट्टू घोड़े पर रात के अंधेरे में अभ्यास करने की कोशिश करता है। रविवार के दिन घुड़सवारी की परीक्षा हुई।

किंतु दो ही दिनों में जिलाधीश का पत्र मिला उसमें लिखा था कि आप परीक्षा में असफल हुए है और दो महिने बाद फिर से परीक्षा होगी। दुःख इसी बात का था कि वह अब तक कभी असफल नहीं हुआ था। लेकिन भगवान जिसकी रक्षा करना चाहता है उसको कोई नहीं मार सकता। दो महीने पूरे होने के पहले ही पता नहीं कैसे जिलाधीश का अचानक तबादला हो गया। जो दूसरे जिलाधीश आये हूये थें उन्होने बिना परीक्षा के ही एक प्रमाणपत्र दे दिया। इस प्रमाणपत्र को प्राप्त करने के लिए उसे कठीण प्रसंगों का सामना करना पड़ा। आखिर तक वह प्रमाणपत्र के पीछे भागा। जब उस पर भगवान की कृपा पड़ती है तब इस संकट से उसको छुटकारा मिला।

निष्कर्ष

अमरकांत की कहानियाँ बहुत खूबसूरती के साथ इस तथ्य को स्पष्ट करती हैं कि मौजुदा समाज, व्यवस्था मानवीय मूल्यों को ध्वस्त ही नहीं करती बल्कि उनमें विपर्यय भी पैदा करती हैं। अमरकांत उन कहानीकारों में से हैं जिन्होने कहानी को जिंदगी के लिए जरूरी चीज का दर्जा दिया है और स्पष्ट शब्दों में

वह आपके निकट जीवन संघर्ष का हथियार रही है। जिसे आपने सामाजिक जीवन के व्यापक संघर्ष में अपनी भूमिका अदा करने के लिए इस्तेमाल किया है।

इस अध्याय में राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, संघर्षो की चर्चा की है। राजनीति ने मानव प्रतिमा को किस प्रकार भ्रष्ट और खंडित किया है यह स्वातंत्र्योत्तर कहानी में साकार हो उठा है और राजनेताओं की प्रतिमा का चित्रण 'हत्यारे' कहानी में हुआ है। 'फ्लाश के फूल' में सामाजिक बदलाव के एक पहलू पर व्यंग्य किया गया है। उसी का दूसरा पहलू छिपकली कहानी में है। बहादूर कहानी में स्वीकृत यह वाक्य कि 'नौकर चाकर तो मारपीट खाते ही रहते हैं। आदमी की क्षुद्रता और हीन भावना को जाहीर करता है।

'म्यान में दो तलवारे' इस सच्चाई पर से परदा उठाती है कि किसप्रकार व्यवस्था अपनी कुचाल से आदमी को पंगु बनाकर छोटी-छोटी बातों के लिए एक दूसरे को अपमानित करती है। तो 'महान चेहरा' कहानी इसी व्यवस्था की विकृति को रेखांकित करती है। आपकी बहुचर्चित कहानी 'मौत का नगर' में हिंदू-मुसलमानों के आपसी कटु-मधुर संबंधों का वर्णन मिलता है। अमरकांत की कहानियों की भाषा सरल, सहज है। आपके अधिकांश पात्र सीधे, विद्रोह न करते हुए भी बेचैनी और परिवर्तन की इच्छा आपके भीतर पैदा कर देते हैं यही आपकी विलक्षणता है।

संदर्भ संकेत

1. मौत का नगर, अमरकांत, ('महान चेहरा' कहानी से), पृ. 153

2. वही, पृ. 157

3. वही, ('हत्यारे' कहानी से), पृ. 107

4. वही, ('मौत का नगर' कहानी से), पृ. 24

5. वही, पृ. 28

6. वही, ('बहादुर' कहानी से), पृ. 259-260

7. वही, ('म्यान में दो तलवारें' कहानी से), पृ. 131

8. वही, पृ. 132

9. वही, ('फ्लाश के फूल' कहानी से), पृ. 217